विचार बिन्दु

यदि एक मनुष्य की उन्नति होती है तो सारे संसार की उन्नति होती है और अगर एक व्यक्ति का पतन होता है तो सारे संसार का पतन होता है।

–महात्मा गाँधी

भजनलाल सरकार ने चुनावी फायदे के लिए बनाये नौ जिले ख़त्म किये

राजस्थान में नए जिलों के गठन और फिर निरस्तीकरण को लेकर सियासत गरमाई हुई है। भाजपा नेताओं का कहना है कि पूर्व की गहलोत सरकार ने अपने चुनावी और निहित राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए तय मापदंडों को ताक पर रखकर जिलों का गठन कर दिया था। वहीं कांग्रेस ने भाजपा सरकार के इस निर्णय का विरोध किया है। बताया जा रहा है कांग्रेस का यह कदम पार्टी के लिए आत्मघाती सिद्ध हुआ। नए जिलों के मतदाताओं ने कांग्रेस का साथ नहीं दिया। यही नहीं महिलाओं सहित आम लोगों को बांटी गई मुफ्त सुविधाओं की रेवड़ी भी कोई काम नहीं आयी। कांग्रेस नेताओं ने नए जिलों और संभागों के गठन को लेकर प्रदेश भर में जश्न मनाया था। कई कांठोस नेताओं ने भाजपा नेताओं पर कई प्रकार के तंज कसे थे।

राजस्थान की भजन लाल सरकार ने एक बड़ा कदम उठाते हुए अपनी सरकार के गठन के एक साल बाद आखिर पिछली गहलोत सरकार के अंतिम दौर में लिए गए फैसले को पलट कर 17 में से नए बनाए गए 9 जिलों और तीन नए संभागों को खत्म करने का फैसला किया। यह फैसला प्रशासनिक रूप से राज्य के विकास और शासन की दिशा में बदलाव का संकेत है। आधिकारिक अधिसूचना जारी होने के बाद राज्य में 41 जिले और 7 संभाग रह गए है। मुख्यमंत्री भजनलाल ने अपनी मज़बूत इच्छाशक्ति, दृढ़ निश्चय और कड़े फ़ैसले लेने की दिशा में यह बड़ा क़दम बढ़ाया है। मुख्यमंत्री ने इससे पहले भाजपा आलाकमान को अपने इस निर्णय से अवगत कराया था। आलाकमान की हरी झंडी मिलते ही एक झटके में 9 जिलों और तीन नए संभागों को खत्म कर दिया। पूर्ववर्ती गहलोत सरकार ने नवीन जिलों एवं संभागों का गठन पूरी तरह से राजनीतिक लाभ लेने के लिए किया। सरकार ने 9 ज़िलों और 3 संभाग को निरस्त करने का फ़ैसला ललित के पंवार कमेटी की रिपोर्ट और मंत्रिमंडल समिति के सुझावों के आधार पर लिया।

यह फैसला उपमुख्यमंत्री प्रेम चंद बैरवा की अध्यक्षता वाली कैबिनेट सब-कमेटी की सिफारिश पर लिया है। सब कमेटी का गठन राज्य सरकार ने पिछली अशोक गहलोत सरकार के दौरान स्थापित 17 नए जिलों और तीन संभागों की स्थिति की समीक्षा के लिए गठित किया था। जिन जिलों को समाप्त किया गया है उनमें अनूपगढ़, जोधपुर ग्रामीण, जयपुर ग्रामीण, सांचौर, दूदू, शाहपुरा, केकड़ी, नीम का थाना और सांगापुर सिटी शामिल है। फिलहाल बालोतरा, ब्यावर, कुचामन, सलूम्बर, कोटपूतली-बहरोड़, डीडवाना, खैरथल-तिजारा और फलोदी को बरकरार रखा गया है। इसके साथ ही पाली, बांसवाड़ा और सीकर संभागों को ख़त्म किया गया है।

आलाकमान की हरी झंडी मिलते ही एक झटके में 9 जिलों और तीन नए संभागों को खत्म कर दिया। पूर्ववर्ती गहलोत सरकार ने नवीन जिलों एवं संभागों का गठन पूरी तरह से राजनीतिक लाभ लेने के लिए किया। सरकार ने 9 ज़िलों और 3 संभाग को निरस्त करने का फ़ैसला ललित के पंवार कमेटी की रिपोर्ट और मंत्रिमंडल समिति के सुझावों के आधार पर लिया।

बताया जाता है गहलोत सरकार ने विधान सभा चुनावों से पूर्व नए जिलों के गठन का फैसला लिया थाताकि चुनावी फायदा उठाया जा सके मगर गहलोत सरकार का यह वार भी खाली गया और उनकी सरकार फिर रिपीट नहीं हुई। यह भी बताया गया नए बनाए गए जिले व्यावहारिक नहीं थे और जनता के हित में नहीं थे। यह एक फिजूलखर्ची थी, जिससे सार्वजनिक व्यय में वृद्धि होगी और सरकार पर अतिरिक्त बोझ पड़ेगा। इसकी कोई सार्वजनिक उपयोगिता नहीं थी और यह केवल राजनीतिक कारणों से किया गया है। नए जिलों के लिए पिछली गहलोत सरकार ने कार्यालयों में न तो आवश्यक पद सृजित किए और न ही कार्यालय भवन बनवाए। बजट एवं अन्य सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं कराई गईं।राज्य सरकार का कहना है गहलोत सरकार के अंतिम समय में आचार संहिता लागू होने से ठीक पहले जिलों और संभागों का गठन किया गया था, जो व्यवहारिक नहीं था। साथ ही इन जिलों की जनसंख्या और प्रशासनिक आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए यह फैसला लिया गया। कैबिनेट की कमेटी ने यह पाया कि इन जिलों का गठन राज्य की विकासात्मक जरूरतों के हिसाब से सही नहीं था, और अब इनका समाप्त होना जरूरी था।

जिले बनाने का काम राज्य सरकारों होता है। इसके लिए कुछ तय मापदंड होते है जिनके पूरे होने पर जिला बनाया जाता है। बताया जाता है गहलोत सरकार ने इन मापदंडों की पालना नहीं की, जिसके परिणाम स्वरुप प्रशासनिक अव्यवस्था फैली। नए जिले बनाने की प्रक्रिया काफी कुछ शहरी आबादी पर भी निर्भर करती है। जिले बनाने का मुख्य मापदंड जनसंख्या और क्षेत्रफल होता है। आमतौर पर एक जिले की आबादी 10 लाख के आसपास होती है। इसलिए अगर किसी जिला मुख्यालय पर आबादी का भार अधिक रहता है तो सरकारें उसे कम करने के लिए नए जिले बना देती हैं। नया जिला बनाने के लिए वहां की आबादी न्यूनतम 2 लाख होनी चाहिए। जनसंख्या अगर इससे कम है तो फिर उसे नया जिला नहीं बनाया जा सकता है। कांग्रेस राज के दौरान अनेक विधायक अपने राजनैतिक लाभ के लिए नए जिले बनाने की लगातार मांग कर रहे थे। कुछ की मांग उचित भी थी मगर गहलोत ने एक साथ 17 जिलों की घोषणा कर लोगों को अचंभित कर दिया। इसकी आलोचना भी हुई मगर गहलोत सरकार अपने फैसले पर अडिग रही। कई प्रशासनिक अधिकारियों और विशेषज्ञों ने बिना सोचे-समझे एक साथ इतने अधिक जिले बनाने को उचित नहीं ठहराया था। इतने जिलों के लिए भारी धनराशि की भी कोई व्यवस्था नहीं की गई थी। राज्य में भाजपा सरकार के गठन के बाद से कहा जा रहा था कि नए जिलों को ख़त्म किया जा सकता है। आखिर भजनलाल सरकार ने 17 में से 9 जिलों को खत्म करने का निर्णय ले ही लिया।

–अतिथि सम्पादक,
बालमुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल गुरूवार 2 जनवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

पौष मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, श्रवण नक्षत्र रात्रि 11:11 तक, हर्षण योग दिन 2:58 तक, तैतिल करण दिन 11:47 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग रात्रि 11:11 से आरम्भ होगा। आज से उर्स मेला अजमेर प्रारम्भ होगा। आज से रज्जब मु.मास 7 शुरू होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:38 तक, चर 11:13 से 12:31 तक, लाभ-अमृत 12:31 से 3:06 तक, शुभ 4:23 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:41

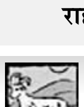

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

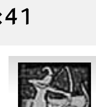

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में रचनात्मक कार्य हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

मकर
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

तुला
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

मीन
आर्थिक वित्तिय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

महाकुंभ-2025 में दिखेगा पुरातन और आधुनिकता का संगम

विनोद पाठक

तीर्थराज प्रयाग में इन दिनों महाकुंभ-2025 मेले की तैयारियां अंतिम रूप ले रही हैं। गंगा, यमुना और संगम तट पर तम्बू नगरी अपना स्वरूप ले चुकी है, लेकिन इस बार का महाकुंभ पिछले सभी कुम्भों से अधिक दिव्य और भव्य होने के साथ आधुनिक भी होने जा रहा है। महाकुंभ-2025 में पुरातन और आधुनिकता की झलक साफ देखने को मिलेगी। महाकुंभ में डिजिटल और आधुनिक तकनीक का प्रयोग मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को नए आयाम प्रदान कर रहा है। पिछले दिनों जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गंगा पूजन के लिए प्रयागराज आए थे तो उन्होंने कहा था कि पहली बार कुम्भ आयोजन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और चैटबॉट का प्रयोग होगा। एआई चैटबॉट कुम्भ सहायक 11 भारतीय भाषाओं में संवाद करने में सक्षम है। उन्होंने सुझाव दिया था कि डाटा और टेक्नोलॉजी के इस संगम से ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़ा जाए।

4200 हेक्टयर क्षेत्र में फैले महाकुंभ-2025 मेले में इस बार डिजिटल, इनोवेशन और एडवांस्ड टेक्नोलॉजी देखने को मिलेगी। सरकार का अनुमान है कि 45 दिनों में 45 करोड़ श्रद्धालु और पर्यटक प्रयागराज पहुंचेंगे, जिनमें भारत के अलावा 100 देशों से लोग पहुंचेंगे। इनकी संख्या का सटीक आकलन करने के लिए ऐप के जरिए डिजिटल एटेंडेंस सिस्टम का प्रयोग किया जा रहा है। रेडियो फ्रिक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (आरएफआईडी) और क्यूआर कोड आधारित एंट्री सिस्टम का इस्तेमाल किया जा रहा है। यह प्रक्रिया भीड़ प्रबंधन को सुगम बनाएगी और सुरक्षा सुनिश्चित करेगी। महाकुंभ की गतिविधियों और कार्यक्रमों की जानकारी देने के लिए मोबाइल ऐप और पोर्टल बनाए गए हैं। सोशल मीडिया और लाइव स्ट्रीमिंग के जरिए श्रद्धालुओं को जोड़ा जा रहा है। वर्चुअल रियलिटी (वीआर) के माध्यम से कुंभ स्नान का अनुभव होगा। डिजिटल एक्सपीरियंस सेंटर में वर्चुअल रियलिटी के जरिए लोग समुद्र मंथन तक कर पाएंगे।

स्वच्छ महाकुंभ के लिए डिजिटल प्रयास हो रहे हैं। कचरा प्रबंधन के लिए स्मार्ट बिन्स और आईओटी आधारित मॉनिटरिंग सिस्टम लग रहा है। रीयल-टाइम डाटा के आधार पर सफाई कर्मचारियों की तैनाती हो रहा है। मोबाइल एप्स के जरिए सफाई की शिकायतें दर्ज करने और उन्हें हल करने की सुविधा विकसित की गई है। क्यूआर बेस्ड टॉयलेट्स की साफ-सफाई का मैकेनिज्म अपनाया गया है। मोबाइल एप्स के जरिए सफाई की शिकायतें दर्ज करने और उन्हें हल करने की सुविधा दी जा रही है। स्वास्थ्य सेवाओं में डिजिटल उपाय अपनाए गए हैं। टेलीमेडिसिन सेवाओं के जरिए तत्काल चिकित्सा सहायता कराई जाएगी। डिजिटल हेल्थ रिकॉर्ड और आपातकालीन सेवा के लिए मोबाइल एप तैयार है। कोविड-19 जैसे संक्रमणों की रोकथाम के लिए आरोग्य सेतु जैसे एप उपयोग में लिए जाएंगे।

भीड़ प्रबंधन और सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरों के नेटवर्क के साथ आर्टिफिशियल इनटेलिजेंस (एआई) आधारित निगरानी सिस्टम लगाया गया है। ड्रोन तकनीक का उपयोग भीड़ और यातायात प्रबंधन के लिए हो रहा है। श्रद्धालुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए डिजिटल मैपिंग और जीपीएस ट्रैकिंग सिस्टम काम करेगा। उत्तर प्रदेश सरकार ने गूगल मैप के साथ एमओयू किया है। महाकुंभ मेला क्षेत्र के संपूर्ण क्षेत्रों को गूगल मैप के जरिए एक्सेस किया जाएगा। गूगल पहली बार किसी अस्थाई शहर में ऐसी व्यवस्था उपलब्ध करा रहा है। यातायात प्रबंधन के लिए स्मार्ट ट्रैफिक सिस्टम और रीयल-टाइम ट्रैफिक मॉनिटरिंग होगी। श्रद्धालुओं को मार्गदर्शन देने के लिए जीपीएस-इनेबल्ड नेविगेशन काम करेगा। पार्किंग की सुविधा के लिए भी डिजिटल टिकटिंग और लोकेशन आधारित सेवाएं रहेंगी।

महाकुंभ में तैनात पुलिसकर्मियों की चुनौतियों को ध्यान में रखकर एक ऐसा एप बनाया गया है, जिसके जरिए उन्हें मेला क्षेत्र की संपूर्ण जानकारी उपलब्ध होगी। इसमें रुट्स, महत्वपूर्ण स्थल और पुलिस अधिकारियों के नंबर समेत कई फीचर्स हैं, जो पुलिसकर्मियों के लिए काफी महत्वपूर्ण होंगे। इसे विशेष तौर पर क्राउड मैनेजमेंट के दृष्टिगत निर्मित कराया जा रहा है, जिसके जरिए मेला क्षेत्र में किसी भी आपातस्थिति में क्विक रिस्पॉन्स मैनेजमेंट प्रक्रिया को पूरा किया जा सके।

सुरक्षा प्रबंधन के दृष्टिगत महाकुंभ मेला में एडवांस्ड एआई डाटा ड्रिवन डाटा एनालिटिक्स सॉल्यूशन सिस्टम को लागू करने की प्रक्रिया की शुरुआत हो गई है। इस सिस्टम को लागू करने से महाकुंभ पुलिस का सर्विलांस कई गुना अधिक प्रभावी और मजबूत हो जाएगा। इससे सुरक्षा प्रबंधन के दृष्टिगत भीड़ प्रबंधन समेत विभिन्न पहलुओं की विवेचना करते हुए घटनास्थल और चिह्नित क्षेत्रों के रियलटाइम डाटा को एनालाइज कर प्रभावी स्ट्रैटेजी बनाने में मदद मिलेगी। महाकुंभ के दौरान फेक न्यूज के खिलाफ अभियान चलाने, साइबर अपराध के प्रति जागरुकता और पुलिस के सराहनीय कार्यों को सोशल मीडिया के विभिन प्लेटफार्म पर प्रसारित करने के लिए डिजिटल वॉरियर्स को तैनात किया गया है। युवा सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसर्स और कॉलेज के छात्रों को जोड़ा गया है।

हरित महाकुंभ के लिए प्रयागराज में 3 लाख से अधिक पौधे रोपे गए हैं। शहर की तरफ जाने वाली 18 सड़कों के दोनों किनारों पर हरित पट्टीकाएं विकसित की गई हैं। महाकुंभ के दौरान शहर को जाम से मुक्ति दिलाने के लिए गंगा किनारे 15 किलोमीटर लंबे रिवर फ्रंट के निर्माण किया गया है। दशाश्वमेध घाट से फाफामऊ तक गंगा किनारे बने इस रिवर फ्रंट में पर्यटकों के लिए सेल्फी प्वाइंट, रेस्टोरेंट और कैफेटेरिया बनाए गए हैं। रिवर फ्रंट से महाकुंभ में श्रद्धालुओं और पर्यटकों की राह आसान होगी। साथ ही, यह रिवर फ्रंट मुंबई की मरीन ड्राइव जैसा अनुभव प्रदान करेगा और हजारों स्थानीय लोगों के रोजगार का साधन बनेगा।

इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर (आईसीसीसी) का अपठोडेशन किया गया है। ये सेंटर भीड़ प्रबंधन, पार्किंग व्यवस्था, आपदा प्रबंधन और रेलवे स्टेशन निगरानी में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। 2750 नए सीसीटीवी कैमरे, 40 वीएमडीएस, 100 स्मार्ट पार्किंग और एआई कंपोनेंट की मदद से महाकुंभ में निगरानी रखी जाएगी। कुम्भ- 2019 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस सेंटर का उद्घाटन किया था।

प्रयागराज नगर निगम में भी अत्याधुनिक सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट (एसडब्ल्यूएम) कंट्रोल रूम और नागरिक सुविधा केंद्र बनाया गया है। नगर निगम का पीएमसी 247 मोबाइल एप और डिजिटल वेबसाइट शुरू हो चुका है। अब न सिर्फ सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट कंट्रोल रूम के माध्यम से शहर की सफाई व्यवस्था सुदृढ़ हो रही है, बल्कि आमजन को भी सेवाओं के लिए इधर-उधर नहीं भटकना पड़ रहा। श्रद्धालुओं के लिए विशेष डिजिटल सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं, जैसे ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन और ई-टोकन सिस्टम, आवास और भोजन की बुकिंग के लिए डिजिटल पोर्टल और खोए हुए श्रद्धालुओं को खोजने के लिए फेस रिकग्निशन सिस्टम बनकर तैयार है। देश-दुनिया से आने वाले श्रद्धालु और पर्यटकों न केवल एक स्थान पर भारत की सभी संस्कृतियों के दर्शन होंगे, बल्कि डिजिटल भारत की नई झलक भी महाकुंभ-2025 में उन्हें देखने को मिलेगी।

–विनोद पाठक

आइये जाने दुनिया में प्रचलित प्रमुख विभिन्न कैलेंडर और उनके इतिहास के बारे में

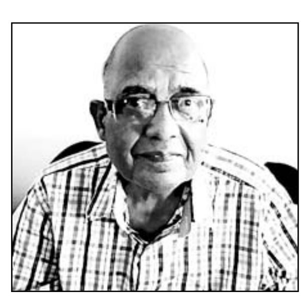

डॉ. जे. के. गर्ग

चन्द्रमा दिखने के क्रम को हम चन्द्रमा की कलाएं भी कहते हैं। यह कलाएं एक तय समय के बाद अवश्य ही जारी रहती है। इस तरह दिन रात एवं चन्द्रमा की कलाओं को आधारित मानते हुवें महीनों और दिनों की गिनती की जाती है। जैसे हम जानते हैं कि सूर्यास्त के बाद ही तारे और चन्द्रमा दिखाई देते हैं और अन्धकार भी हो जाता है इसीलिए इस अवधि को रात कहा जाता है। सूर्योदय होने पर उजाला होने लगता है जो सूर्यास्त होने तक रहता है अत: इस अवधि को दिन कहा जाता है। यह भी ज्ञात हुआ कि मौसम में बदलाव सूर्य की वजह से ही होता है। सूर्य का एक चक्र एक मौसम से दूसरे मौसम माना जाता है। इसी तरह चन्द्रमा का चक्र एक नये चाँद से दूसरे नये चाँद माना जाता है। चन्द्रमा का चक्र साढ़े उन्नतीस दिनों के अंदर पूरा होता है इसी अवधी को महीना कहा जाता है। दिन रात और महीनों की गिनती हेतु कैलेंडर या पंचांग का जन्म हुआ। अलग-अलग देशों ने अपने-अपने तरीकों से कैलेंडर बनाये क्योंकि एक ही समय में पृथ्वी के विभिन्न हिस्सों के अंदर मौसम और दिन रात की अवधि भी भिन्न-भिन्न होती है। हमारे विशाल देश के अंदर भी लगभग पचास तरह के कैलेंडर प्रचलित है।

विक्रम संवत– विक्रम संवत की शुरुआत 57 ईस्वी (बी.सी) से हुई थी। इसी दिन सम्राट विक्रमादित्य ने राज्य स्थापित किया। उन्हीं के नाम पर विक्रमी संवत नाम पढ़ा। इस प्रकार से 2025 ईस्वी में विक्रम संवत 2082 होगा। विक्रम संवत के अंदर साल का प्रथम मास चैत्र शुक्ल एकम या या प्रतिपदा और साल का अंतिम मॉस फाल्गुन होता है। विक्रम संवत अंग्रेजी कैलेंडर से 57 वर्ष आगे होता है। विक्रम संवत के अंदर अंग्रेजी कैलेंडर के मुताबिक साधारणतया निम्न प्रकार से महीने होते हैं यथा– चेत्र मास मार्च-अप्रेल में, वैशाख अप्रेल-मई में, जेयेष्ट मई-जून, आषाढ़ जून-जुलाई, सावन जुलाई-अगस्त, भाद्रपद अगस्त-सितम्बर, अश्विन सितम्बर-अक्तूबर, कार्तिक अक्तूबर-नवम्बर, मगसर नवम्बर-दिसम्बर, पोष दिसम्बर-जनवरी, माघ जनवरी-फरवरी और फाल्गुन फरवरी-मार्च। दिवाली और दशहरा कार्तिक महीने के अंदर आते है। वहीं राखी सावन मास के अंदर होती है और होली फाल्गुन मास मे मनाई जाती है।

विक्रम संवत से जुड़ी धार्मिक और ऐतिहासिक मान्यता

चैत्र प्रति पदा का विशिष्ट ऐतिहासिक महत्व भी हैं क्योंकि सनातन धर्म की मान्यता है कि चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की थी। सम्राट विक्रमादित्य ने इसी दिन राज्य स्थापित किया। उन्हीं के नाम पर विक्रमी संवत का पहला दिन प्रारंभ होता है। कहते हैं कि प्रभु श्री राम के राज्याभिषेक का दिन यही है। चैत्र प्रतिपदा शक्ति और भक्ति के प्रतीक नवरात्र का पहला दिन भी है। युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ। चैत्र प्रतिपदा ही सिखों के द्वितीय गुरु श्री अंगद देव जी का जन्म दिवस भी है। स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने इसी दिन आर्य समाज की स्थापना की एवं कृण्वंतो विश्वमार्यम् का संदेश दिया। सिंध प्रान्त के प्रसिद्ध समाज रक्षक वरूणावत संत झूलेलाल जी का अवतरण भी इसी दिन हुआ था। सम्राट विक्रमादित्य की भांति शालिवाहन ने हूणों को पराजित कर दक्षिण भारत में श्रेष्ठ राज्य स्थापित करने हेतु यही दिन चुना था। परमपिता परमात्मा सभी मानव मात्र को विक्रम संवत 2079 के अंदर रिद्धि दे, सिद्धि सुख-समृद्धि प्रदान करें। हमारे ह्रदय और अंतरात्मा को ज्ञान से आलोकित करे। हम सभी चिंता मुक्त जीवन जीयें। हमारा जीवन के अंदर कष्ट-दु:ख को दूर रहे, हम अपने स्वजनों और मित्रों से स्नेहपूर्ण व्यवहार करें। हम सभी स्वस्थ रहें। राष्ट्र दिन प्रति दिन उन्नति करें। सभी भारतवासी आपस में स्नेह पूर्वक रहें, एक-दूसरे पर परस्पर विश्वास करें और सौहार्द बनाये रखे। अपने अपने इष्ट देव और आराध्य देव की अनुकंपा बनी रहे।

ग्रेगोरियन या अंग्रेजी कैलेंडर के अंदर साल का प्रथम महीना जनवरी और अंतिम महीना दिसम्बर होता है। संसार के अधिकांश मुल्कों के अंदर ग्रेगोरियन या अंग्रेजी केलेंडर प्रचलित है। अनेक देशों के अंदर नव वर्ष एक जनवरी को धूमधाम हर्षोल्लास के साथ नये वर्ष का स्वागत किया जाता है। 25 दिसम्बर को क्रिसमस का पर्व भी मनाया जाता है।

शक संवत– शक संवत को राष्ट्रीय पंचांग बनाने का फैसला 22 मार्च 1957 को लिया गया। शक संवत को राष्ट्रीय पंचांग बनाने के लिये तर्क दिया गया कि इस संवत का उल्लेख प्राचीन शिलालेखों में भी मिलता है। यह भी माना जाता है कि शक संवत का प्रारंभ कुशक राजा कनिष्क के राज्य काल के समय 78 ईस्वी (ऐ.डी) को हुआ था। इसके अंदर साल का प्रथम मास चैत्र शुक्ल एकम या या प्रतिपदा और साल का अंतिम मास फाल्गुन होता है। ग्रेगोरियन या अंग्रेजी केलेंडर से 78 साल पीछे होता है इस तरह 2025 ईस्वी में शक संवत 1947 है।

हिजरी कैलेंडर– हिजरी केलेंडर शुक्रवार 16 जुलाई 622 ईसवी के अंदर इस्लामिक या हिजरी कैलेंडर आरम्भ हुआ था। इस केलेंडर के अंदर एक उल्लेखनीय बात है कि इसके अंदर चन्द्रमा की घटती-बढती गति का का संयोजन नहीं किया गया है इस वजह इसके महीने प्रति वर्ष लगभग 10 दिन पीछे खिसकते रहते हैं। इस केलेंडर को हिजरी कहा जाता है क्योंकि मोहम्मद साहिब ने इसी वर्ष अपने अनुयायीयों के संग मक्का को छोड़ करके मदीना के लिये हिजरत की थी। हिजरी केलेंडर के अंदर 12 महीने होते हैं जिसमे 29 और 30 दिन के बाद नया मॉस आरम्भ होता इस तरह एक साल के अंदर 354 दिन होते हैं। मोहर्रम के महीने के अंदर हजरत इमाम हुसैन और उनके मित्रों ने बातिल से युद्ध करते हुए अपनी शहादत दी थी।

–डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर

ठंड में ठिठुर रहे आंगनबाड़ी के मासूम, छुट्टी देना भूला प्रशासन

अभिभावकों ने मांग की है कि स्कूलों की तरह आंगनबाड़ी के बच्चों की भी छुट्टी की जाए

हनुमानगढ़, (निसं)। सर्दी का सितम जारी है, बावजूद इसके नन्हे-मुन्ने बच्चों को आंगनबाड़ी केन्द्रों पर बुलाया जा रहा है। ठंड से बचाव के लिए आंगनबाड़ी केन्द्रों पर कोई इन्तजाम नहीं होने के कारण नन्हे-मुन्ने बच्चे ठिठुरते रहते हैं। ठंड के कारण अभिभावक भी बच्चों को आंगनबाड़ी केन्द्रों में भेजने से कतराते हैं। अभिभावकों ने मांग की है कि स्कूलों की तरह आंगनबाड़ी केन्द्र के बच्चों की भी छुट्टी की जाए।

वार्ड 36 सी आंगनबाड़ी केन्द्र की पुष्पा अरोड़ा ने बताया कि उनके आंगनबाड़ी केन्द्र में कुल 43 बच्चे हैं। कड़ाके की सर्दी के कारण अधिकतर बच्चे आंगनबाड़ी केन्द्र में नहीं आ रहे। कुछ बच्चों को वे बुलाकर भी लाते हैं, लेकिन आंगनबाड़ी केन्द्र में ठंड से बचाव के लिए कोई व्यवस्था नहीं है। इस कारण बच्चे ठंड में ठिठुरते रहते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से होने के कारण इन बच्चों में से कईयों के पास स्वेटर तो कईयों के पास जूते नहीं हैं।

■ आंगनबाड़ी केन्द्रों पर सर्दी से बचाव के लिए नहीं है कोई इंतजाम

उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी केन्द्र का उद्देश्य है कि बच्चों का कुपोषण दूर हो सके, बच्चे शिक्षा से वंचित न रहें, स्कूल में जाने से पहले कुछ शिक्षित हो जाएं और बैठना सीख जाएं। उनका प्रयास रहता है कि बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखाएं और व्यवस्थित रूप से बैठाएं, लेकिन वे सर्दी के कारण बैठ नहीं पाते। उन्होंने बताया कि आंगनबाड़ी केन्द्र के बच्चों की छुट्टियां करने के लिए अधिकारियों से कहा गया है।

आंगनबाड़ी 35 सी की कार्यकर्ता आशा देवी ने बताया कि जब वे बच्चों को घर से लाने के लिए जाते हैं तो अभिभावक कहते हैं कि इतनी ठंड में जब बड़े बच्चों के स्कूलों की छुट्टियां चल रही है तो आंगनबाड़ी के बच्चों की छुट्टी क्यों नहीं की जा रही। इस कारण अभिभावक अपने बच्चों को आंगनबाड़ी केन्द्र पर नहीं भेजते। उन्हें भी बच्चों को लाने व घर तक छोड़कर आने में परेशानी होती है। बच्चे इस मौसम में खांसी-जुकाम से पीड़ित हैं। उनके आंगनबाड़ी केन्द्र में कुल 17 बच्चे हैं लेकिन 8 से 10 बच्चे ही आ रहे हैं। आंगनबाड़ी केन्द्र का समय सुबह 11 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक का है। अधिकारी भी आंगनबाड़ी केन्द्र के बच्चों की छुट्टी के संबंध में कोई आदेश प्राप्त नहीं होने की बात कह रहे हैं।

वहीं, बच्चों के परिजनों ने कहा कि कड़ाके की सर्दी में बड़े बच्चों के अवकाश हैं, लेकिन आंगनबाड़ी केन्द्र के बच्चों की छुट्टियां नहीं है। आंगनबाड़ी केन्द्रों पर सर्दी से बचाव के लिए कोई व्यवस्था न होने के कारण बच्चे ठिठुरते रहते हैं। इससे वे बीमार हो रहे हैं। वे बच्चों को आंगनबाड़ी केन्द्र पर नहीं भेजते। उन्होंने मांग की कि आंगनबाड़ी केन्द्र के बच्चों की भी छुट्टी की जाए।

भीलवाड़ा शहर कोहरे की आगोश में लिपटा रहा

जिला मुख्यालय के आसपास भी कोहरा छाया रहा और ट्रेनें-बसें देरी से चली

भीलवाड़ा, (निसं)। बुधवार की सुबह शहर कोहरे की आगोश में लिपटा रहा और सर्द हवाओं ने सिहरन बढ़ा दी, इसके चलते लोग सुबह काफी समय तक तो बिस्तरों से नहीं निकले और चाय की चुस्कियों का आनंद लेते रहे। जिला मुख्यालय के आस-पास भी कोहरा छाया रहा और ट्रेन और बसें देरी से चली।

मौसम ने बुधवार को अचानक करवट बदली। नए साल के पहले दिन मौसम पूरी तरह से बदला हुआ नजर आया, सुबह लोग उठे तो शहर को कोहरे के आगोश में देखा। खुले मैदान और नदी तालाब के आसपास कोहरा काफी घना था। बुधवार को अधिकतम तापमान 12 डिग्री दर्ज किया गया था। तापमान में 9 डिग्री की गिरावट आई। शाम के समय भी ठंडक बढ़ गई। लोग अलाव आदि से सर्दी से निजात पाते देखे गए।

कोहरे के कारण हाइवे से गुजरे वाले वाहनों को आवागमन में खासी परेशानी का सामना करना पड़ा। सड़कों पर वाहन धीमी रफ्तार से चले। रोडवेज बसें अपने निर्धारित समय से देरी से पहुंची। वाहन चालकों को हैड लाइट जलाकर आवागमन करना पड़ा। सूर्यदेव के दर्शन नहीं होने से लोग घरों में ही दुबके रहे। स्कूलों का अवकाश होने के कारण बच्चे भी देरी से उठे।

■ नए साल के पहले दिन मौसम पूरी तरह से बदला हुआ नजर आया, सुबह लोग उठे तो शहर को कोहरे की आगोश में देखा

एमजी हॉस्पिटल के डॉक्टर जयराज वैष्णव के अनुसार यह मौसम हृदय और सांस रोगियों के लिए खतरनाक है। ऐसी स्थिति में उन्हें सावधानी रखना चाहिए। ठंड से बचने के लिए आग का सहारा लें। इसके अलावा सुबह जल्दी नहीं उठे और खान-पान का विशेष ध्यान रखें। इन दिनों अस्पताल में सांस के मरीजों की संख्या बढ़ रही है।